पंजीयन क्रमांक 6852/60

लोकविज्ञान

विज्ञान समिति, उदयपुर

जुलाई 2017

जन्म दिवस पर विशेष –

ऋषि तुल्य वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी

डॉ. दौलत सिंह कोठारी का नाम भारत के ही नहीं अपितु विश्व के महान वैज्ञानिकों की गिनती में आता है। वे एक महान वैज्ञानिक होने के साथ साथ एक महान दार्शनिक भी थे। उनके व्यक्तित्व में एक वैज्ञानिक के नाते सत्य की विवेचना करने की शक्ति और एक मानव के नाते प्रेम के स्रोत का अद्‌भुत संगम था।

डॉ. कोठारी की संयोगवाद में आस्था थी। उनके पिता की 1918 में इंदौर में लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु हो गयी। वे वहां अपने मित्र सिरहमल बाफना, जो इंदौर राज्य के गृहमंत्री थे, के आग्रह पर गये हुए थे। उस समय डा. कोठारी की आयु 12 वर्ष की थी और वे अपने चार भाइयों व एक बहिन में सबसे बड़े थे। उनकी माता के निवेदन पर बाफना साहब ने दौलत सिंह को अपने घर पर रख लिया और अपने बच्चों के साथ ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करा दिया। दौलत सिंह ने 1922 में इंदौर से विज्ञान लेकर 10 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। यदि वे अपने पैतृक गृह उदयपुर में रहते तो वे कदापि विज्ञान की शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते क्योंकि उस समय उदयपुर में विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं था। इसलिये वे कहा करते थे कि उनके पिता की मृत्यु एक ऐसा संयोग था, जिसके फलस्वरूप वे इन्दौर में रहकर विज्ञान के क्षेत्र में पदार्पण कर सके। बाद में उन्होंने उदयपुर से इन्टर पास किया और महाराणा उदयपुर द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति के आधार पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया। जहाँ प्रो. मेघनाथ साहा के साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् वहां से वे उच्च शिक्षा के लिए केवेंडिश लेबोरेटरी, केम्ब्रिज गये, जहाँ उन्होंने प्रो. रदरफोर्ड के मार्गदर्शन में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

वर्ष 1934 में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करना आरम्भ किया और कालान्तर में वे भारत सरकार के सुरक्षा मंत्रालय में वैज्ञानिक परामर्शदाता रहे। आप वर्ष 1961–73 तक **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** के अध्यक्ष रहे और इसी दौरान वे शिक्षा आयोग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उनकी शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट को शिक्षा क्षेत्र की बाइबल कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस रिपोर्ट का शीर्षक उन्होंने रखा – ''शिक्षा और राष्ट्रीय विकास''। इस रिपोर्ट में यह स्पष्ट कहा गया है कि विद्यार्थियों को विद्यालयों से निकलने के बाद सांसारिक और व्यावहारिक जगत में प्रवेश करने की समुचित कुशलता प्राप्त हो, इस उद्देश्य से स्कूल के पाठ्यक्रम में समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए । उनमें औद्योगिक शिक्षा के साथ समाजसेवा, सहिष्णुता और सहयोग की भावना भी जागृत हो, जिससे कि वे अच्छे मानव बनकर समाज के ऋण से उऋण हो सकें।

डॉ. कोठारी लब्धप्रतिष्ठित वैज्ञानिक नील्ज बोहर के पूरकवाद के सिद्धान्त के समर्थक थे। उनका कहना था कि परस्पर विरोधी तत्वों के मिलाप से संपूर्णता प्राप्त होती है और इस प्रकार के परस्पर सहयोग अथवा मिलाप का आधार अहिंसा है। उनका कहना था कि जैन दर्शन का स्यादवाद और अनेकांतवाद भी यही कहता है और इस प्रकार यह सत्य और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसे ही उपनिषद् और गीता भी पारस्परिक पूर्णत्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। पूर्ण में से पूर्ण निकालो तो बाकी भी पूर्ण ही बचता है। यही विश्व एकत्व का दर्शन है। यही पराविधा है। वैज्ञानिक सत्य और नैतिकता परस्पर विरोधी नहीं हैं। ये एक दूसरे के पूरक हैं। वैज्ञानिक भी सत्य की खोज में हैं। दार्शनिक भी सत्य की खोज में। सत्य की खोज के लिये ना केवल विज्ञान पर्याप्त है ना ही केवल दर्शन। दर्शन और विज्ञान का मिलाप ही पूर्ण सत्य की प्राप्ति की ओर ले जायेगा।

डॉ. कोठारी की मान्यता थी कि समाज का संगठन परस्पर प्रेम और मैत्री पर आधारित है। प्रेम और मैत्री मानव जाति के अस्तित्व के मूल मंत्र हैं। उनका कहना था कि अहिंसा के मार्ग के पथिक को ईश्वर और मानव में पूरी श्रद्धा होनी चाहिए। मानव को विज्ञान और अहिंसा दोनों की आवश्यकता है। यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वैज्ञानिक अहिंसा अथवा अहिंसात्मक विज्ञान में ही मानव कल्याण की कुंजी है।

डॉ. कोठारी ऋषि तुल्य थे। मां सरस्वती के सच्चे उपासक । मेवाड़ के सपूत दौलत सिंह 4 फरवरी 1993 को रात में आराम से लेटे और चिर निद्रा में समा गये। उनको शतशः प्रणाम।

(विज्ञान चेतना प्रसार पत्रिका में प्रकाशित इस लेख के लेखक स्व. श्री जी.बी.के. हूजा 1960 में उदयपुर के जिलाधीश थे। लोकविज्ञान का प्रथम अंक (15 अगस्त 1960) भेंट करने विज्ञान समिति के डॉ. के.एल. कोठारी और डॉ. के.बी. शर्मा उनके पास पहुंचे तो उन्होंने प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हो सकता है कि अन्य लोग इस प्रकाशन का महत्त्व आज न समझे पर मैं इसका दूरगामी महत्त्व समझता हूं और इस प्रयास को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।)

विशेषज्ञ परामर्शद् : डॉ. के.पी. तलेसरा, डॉ. महीप भटनागर, डॉ. शैल गुप्ता, डॉ. विभा भटनागर **सम्पादक :** प्रकाश तातेड़

विज्ञान समिति, रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर – 313 001 दूरभाष : 0294-2413117, 2411650
Website : www.vigyansamitiudaipur.org, E-mail : samitivigyan@gmail.com

योग करें, स्वस्थ रहें

योग हमारी प्राचीन धरोहर है। हर व्यक्ति को सुबह उठकर एक घंटा आवश्यक रूप से योग करना चाहिए। योग करने से शरीर स्वस्थ रहता है तथा कोई बीमारी नहीं लगती है। योग द्वारा कई बीमारियों को बिना दवाई के भी ठीक किया जा सकता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके विधान का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है अतः प्राणायाम एवं योगाभ्यास सम्बन्धी सावधानियाँ निम्नांकित हैं –

1. नित्यकर्म निवृत्ति के पश्चात् योग करें।
2. प्राणायाम एवं योगासन के आधे घण्टे पश्चात् द्रव में तथा एक घण्टे पश्चात् ही द्रव्य-भोजनादि लें।
3. भोजन के पाँच घण्टे के अन्तराल पर ही प्राणायाम व योगाभ्यास करें।
4. योगासन का स्थान प्रदूषण रहित खुला, स्वच्छ एवं समतल हो।
5. इसके दौरान कपड़े हल्के ढीले व सुविधायुक्त हों।
6. दरी/चटाई/कम्बल/कालीन पर योग करें। खाली जमीन/बिस्तर पर योग न करें।
7. अभ्यास के दौरान मल/मूत्र/छींक /खांसी आदि न रोकें, विसर्जित करके करें।
8. रोगी व्यक्ति एवं महिलाएं मासिक धर्म व गर्भावस्था में आसन न करें।
9. अभ्यास काल में बात न करें।
10. कमर दर्द वाले आगे झुकने वाले आसन न करें।
11. हर्निया के रोगी पीछे झुकने वाले आसन न करें।
12. जल्दीबाजी/प्रतिस्पर्धा/जबरदस्ती/झटके के साथ आसन न करें।
13. आसन के बाद प्राणायाम किया जा सकता है लेकिन प्राणायाम के तुरन्त बाद आसन नहीं करना चाहिए। (कारण , प्राणायाम केवल शारीरिक व्यायाम न होकर आध्यात्मिक साधना का भी सशक्त माध्यम है, जिसमें साधक अंतर्मुखी हो जाता है।)
14. कुछ प्राणायामों से शरीर में गर्मी बढ़ती है तो कुछ से ठंडक तथा कुछ सामान्य होते हैं। अपने शरीर की प्रकृति तथा ऋतुओं के अनुसार प्राणायामों का चयन करें।
15. प्राणायाम किसी भी आसन-सिद्धासन/वज्रासन/पद्मासान/सुखासन जो सुखकर व अधिक समय तक बैठने के लिये उपयुक्त हो किया जा सकता है।
16. आसनों को प्राणायाम तथ प्राणायाम को इष्ट मंत्र/गुरुमंत्र/ध्यान लय के साथ करने से लाभ कई गुना अधिक प्राप्त होता है।

प्रतिदिन योग करें निरोग रहें।

– डॉ. श्रीमती शैल गुप्ता

बायोमेट्रिक मशीन की कार्य प्रणाली

आजकल विभिन्न सरकारी व निजी कार्यालयों मं अपने स्टाफ की उपस्थिति का समयबद्ध व पारदर्शी रिकॉर्ड रखने के लिए बायोमेट्रिक मशीन का उपयोग किया जा रहा है। आओ जाने, यह कैसे काम करती है –

बायोमेट्रिक मशीन (फिंगर प्रिंट स्कैनर) पर सबसे पहले कर्मी की अंगुली लगाई जाती है, जिसे वह अपने डेटा में सेव कर लेती है। इसके बाद जब कर्मी फिंगर प्रिंट स्कैनर पर अंगुली रखता है तो वह अंगुली की रेखाओं के जरिये दर्ज डेटा से उसका मिलान करती है। मिलान हो जाने पर कर्मचारी की उपस्थिति दर्ज हो जाती है। अंगुलियों की पहचान एकदम सटीक हो इसके लिए बायोमेट्रिक मशीन 3 चरण में पहचान करता है। सबसे पहले फिंगर प्रिंट स्कैनर में कर्मचारी के अंगुलियों की इमेज के साथ-साथ उसका नाम व अन्य जानकारियां भी दर्ज की जाती हैं। फिर स्कैनर अंगुलियों की इमेज को यूनिक कोड में बदलकर कम्प्यूटर में स्टोर कर लेता है। अब कम्प्यूटर में लगे सॉफ्टवेयर की मदद से अंगुलियों की लकीरों और बिंदुओं के आधार पर एक खास पैटर्न बनता है। इस पैटर्न में हर कर्मचारी का एक अलग न्यूमेरिक कोड बनता है और जब भी कर्मी फिंगर प्रिंट स्कैनर पर दर्ज की गई अंगुली लगाता है तो यह उसे स्कैन कर एक यूनिक न्यूमेरिक कोड तैयार करता है और डेटा में सेव हर कर्मी के न्यूमेरिक कोड से मिलान करता है।

फिटकरी के उपयोग

फिटकरी को अंग्रेजी में एलम (alum) कहते हैं। ये पोटेशियम एलुमिनियम सल्फेट है। इसमें कई प्रकार के औषधीय गुण होते हैं।इसमें चोट लगने पर खून बहना बंद करने का विशेष गुण होता है तथा साथ ही ये एंटीसेप्टिक और एंटी बैक्टीरियल की तरह काम करती है। इन्हीं गुणों की वजह से इसे शेविंग के बाद दाढ़ी पर मलते हैं।

- पनीर बनाने के लिए दूध को पिसी हुई फिटकरी डालकर फाड़ें। इस प्रकार बना हुआ पनीर अधिक स्वादिष्ट व मुलायम बनता है।
- घायल पशु-पक्षी को लगी चोट फिटकरी घुले पानी से धोएं। ये पानी उसे थोड़ा सा पिला दें। इससे वह जल्दी ठीक हो जाएगा।
- गर्म पानी में फिटकरी और नमक मिलाकर गरारे व कुल्ला करने से गले की खराश, मुंह की बदबू आदि ठीक हो जाते हैं। मसूड़ों से खून आता हो तो फिटकरी घुले पानी के कुल्ला करने से ठीक होता है।
- चेहरे की झुर्रियाँ मिटाने के लिए फिटकरी के टुकड़े को पानी में डुबोकर चेहरे पर हल्के हाथ से मलें। सूखने पर सादा पानी से धो लें। कुछ ही दिन में झुर्रियां मिट जाएंगी।
- यदि जहरीला कीड़ा या बिच्छू काट ले तो पानी में फिटकरी का पाउडर गाढ़ा घोल बनाकर लगाने से आराम मिलता है।

चर्म रोग : कारण और निवारण

त्वचा शरीर का सबसे विस्तृत अंग है जो बाह्य जगत् के संपर्क में रहता है। यही कारण है कि इसे अनेक वस्तुओं से हानि पहुँचती है। इस हानि का प्रभाव शरीर के आंतरिक अवयवों पर नहीं पड़ता। त्वचा सरलता से देखी जा सकती है। इस कारण इसके रोग, चाहे चोट से हों अथवा संक्रमण (infection) से हों, रोगी का ध्यान अपनी ओर तुरंत आकर्षित कर लेते हैं ।त्वचा के रोग विभिन्न प्रकार के होते हैं। इनके प्रमुख कारण निम्नानुसार है –

जन्मजात कारण (Nevuscar)–

● त्वचा संबंधी कुछ रोग जन्म से होते हैं, जिनका कारण त्वचा का कुविकास (maldevelopment) है। इस प्रकार के रोग जन्म के कुछ दिन पश्चात् ही माता एवं अन्य लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं, उदाहरणार्थ लाल उठे हुए धब्बे (nevus) जिनमें रक्त झलकता है। ये शरीर के किसी अंग पर निकल सकते हैं। ये चिह्न (scar) तीन चार वर्ष की आयु में अपने आप मिट जाते हैं। इनकी किसी विशेष चिकित्सक से चिकित्सा करानी चाहिए, जिससे कोई खराब, उभरा हुआ चिह्न न रह जाये।

● इसके अतिरिक्त कुछ मनुष्यों की त्वचा सूखी और मछली की त्वचा की भाँति होती है। यह जन्म भर ऐसी ही रहती है। ऐसे व्यक्ति को साबुन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कुछ मनुष्यों की त्वचा, बाल और आँखों का स्वच्छ मंडल (cornea) श्वेत होता है। ऐसे व्यक्ति को सूरजमुखी, अथवा वर्णहीन (albino), कहते हैं। सूर्य की किरणें इनके लिए अत्यंत हानिकारक होती हैं, अतः इन्हें सदैव धूप से बचे रहना चाहिए तथा धूप में निकलते समय ''धूप का चश्मा'' उपयोग में लाना चाहिए।

भौतिक कारण

त्वचा पर भौतिक कारणों (physical causes) से भी कुछ रोग होते हैं, जैसे किसी वस्तु के त्वचा पर दबाव तथा रंग, गरमी, सरदी एवं एक्सरे(X-ray) के प्रभाव के कारण उत्पन्न रोग। त्वचा पर कठोर दबाव के कारण ठेस पड़ जाती है जिसमें दबाव के कारण पीड़ा होती है। कभी कभी ऐसा भी देखा गया है कि निरंतर दबाव पड़ने पर त्वचा पतली पड़ जाती है, जैसे हर्निया। इसकी रोकथाम के लिये कमानी पहनते हैं।

अधिक भीगने पर त्वचा सिकुड़ती है और छूटने लगती है। इस तरह की त्वचा पर साबुन का बुरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार की त्वचा धोबी, काम काजी नौकर, होटल के रसोइए तथा बरतन साफ करनेवालों की होती है। हाथ पैर की त्वचा के साथ साथ उँगलियों और नाखून पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

Frost bite (तुषार रोग)

त्वचा पर ठंड का भी बुरा प्रभाव पड़ता है, विशेषकर यदि ताप शून्य से नीचा हो। अधिक शीत से त्वचा की कोमल (delicate) छोटी छोटी महीन रक्तवाहिनी शिराएँ सिकुड़ने लगती हैं तथा त्वचा नीली पड़ जाती है, इन शिराओं में रक्त जम जाता है तथा अंग गल जाता है। इस रोग को तुषार रोग (frost bite) कहते हैं। इस का प्रभाव कान, नाक और हाथ पैर की उँगलियों पर पड़ता है। इस रोग की प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान उन सैनिकों के लिये अत्यंत आवश्यक है, जो पर्वतीय सीमा की रक्षा करते हैं। जिस अंग की त्वचा पर तुषार रोग का प्रभाव हो उसको आराम से रखना चाहिए तथा साफ करने के बाद ऊनी कपड़े से लपेट देना चाहिए। मालिश और सेंक हानिकारक हैं।

अधिक शीत के कारण कुछ लोगों के हाथ पैर की उँगलियाँ सूज जाती हैं, लाल पड़ जाती हैं और उनमें घाव भी हो जाते हैं। इस रोग से बचने के लिए अधिक प्रोटीन और वसायुक्त पौष्टिक भोजन करना चाहिए और उँगलियों को दस्ताना पहनकर गरम रखना चाहिए।

रसायनों का प्रभाव

आधुनिक समय में अन्य देशों में व्यावसायिक त्वचा रोगों (occupational skin diseases) की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। औद्योगिक संस्था में श्रमिक के काम करते समय यह देखा जाता है कि जो रसायन उपयोग में आते हैं, वे श्रमिकों के लिए हानिकारक तो नहीं हैं। दूसरी बात यह है कि ऐसी औद्योगिक संस्थाओं के प्रबंधक एवं चिकित्सक यह भी देखते हैं कि समस्त कर्मचारी उचित प्रकार से हाथ पाँव धोते हैं और काम के पश्चात् अपने कपड़े बदलते हैं अथवा नहीं। जिन कपड़ों को पहन कर वे रसायनों का प्रयोग करते हैं, उन्हें काम के पश्चात् तुरंत बदल लेना चाहिए, जिससे शरीर पर उन पदार्थों का बुरा प्रभाव अधिक देर तक न पड़ता रहे।

अस्वच्छता एवं छूत के रोग

अधिकांशतः त्वचा के वे रोग देखे जाते हैं, जो शरीर की पूर्ण सफाई न करने, निरंतर स्नान न करने, रोगी पशुओं की त्वचा के स्पर्श एवं निर्धनता से हो जाते हैं। इस प्रकार के रोग छूत के रोग होते हैं और एक दूसरे के संसर्ग से लग जाते हैं। ऐसे रोगों में अधिकांश रूप से खाज (scabies), जूँ (pediculosis) और दाद (ringworm) इत्यादि होते हैं। वे सब रोग, जिनमें खुजली एक सामान्य उपसर्ग है, भिन्न भिन्न कारणों से होते हैं। खाज के लिये गंधक का मरहम बहुत लाभदायक है। रोग के पूरे निदान के लिये चिकित्सक की आवश्यकता पड़ती है। गंधक के मरहम को शरीर पर रात में लगाकर सोना चाहिए।

सिर की जूँ से छुटकारा पाने के लिये सिर की सफाई करना तथा बालों को कटवाना चाहिए और डी.डी.टी. या अन्य औषधियों का प्रयोग चिकित्सक की राय के अनुसार करें।

दाद (Ringworm): पसीना आनेवाले स्थानों पर यह रोग अधिक देखा जाता है। इस कारण ऐसे स्थानों को पाउडर द्वारा सूखा रखना चाहिए। साथ ही मरहम और पाउडर का प्रयोग दाद के ठीक होने के पश्चात् भी कुछ समय तक निरंतर करते रहना चाहिए। इस रोग के उपचार के लिए अभी एक टिकिया antifugal tab. निकली है जो रोग के लिये अत्यंत लाभदायक है।

त्वचा पर रहने वाले जीवाणु

त्वचा पर रहनेवाले जीवाणु अधिकतर अपने आप ही त्वचा के रोग का कारण हो जाते हैं, जो फोड़े (boils), फुंसियों (furrunculosis) के रूप में प्रकट होता है। इन सब में जीवाणु किसी छुपनेवाले स्थान, जैसे नाक, में छिपे रहते हैं। इस कारण यह आवश्यक है कि चिकित्सा के समय इनपर भी ध्यान दिया जाय। इन रोगों की चिकित्सा में खाने तथा लगाने की दवा का प्रयोग करना चाहिए। जिस जगह की त्वचा पर ये रोग प्रकट हों उसकी सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए। इन रोगों के लिये कोई मरहम, जिसमें कि चिकित्सक जिंक ऑक्साइड (Zinc oxide), हाइडेमॉन (Hydammon), आयोडॉक्सिक्विऑनलिन (codoxyquionlin) इत्यादि मिलाते हैं, लगाना चाहिए और सल्फा तथा ऐंटिबायोटिक (antibiotic) वर्ग की औषधि का मुँह, अथवा इंजेक्शन द्वारा, प्रयोग करना चाहिए।

इनके अतिरिक्त त्वचा के कुछ और रोग बहुत ही सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा होते हैं। इनमें से एक रोग को गोखरू(wart or molluscum contagiosum) कहते हैं। यह छूत का रोग है। इसी प्रकार का एक और रोग है, जिसे हरपीजजॉस्टर (Herpeszoster) कहते हैं। इसमें शरीर पर छाले पड़ जाते हैं और दर्द होता हैं। आयु के अनुसार ही पीड़ा का अनुभव होता है, अर्थात् बच्चों को पीड़ा कम होती है और बड़ों को अधिक। एक अन्य रोग हरपीज लैबिऐलिस (herpes labialis) और प्रोजेनिटैलिस (progenitalis) भी होता है। इनमें होंठ तथा शिश्न पर ज्वर आदि के बाद छाले पड़ जाते हैं। अभी तक इन रोगों के विषाणुओं (viruses) को मारने की कोई उपयुक्त औषधि ज्ञात नहीं हो सकी है।

अन्य कारण

त्वचा शरीर का बाह्य अवयव है। इस कारण अनेक वस्तुओं का प्रभाव इस पर पड़ता है। यह प्रभाव त्वचा को अत्यंत कोमल और सुग्राही बनाकर छाजन (eczema), या त्वचाशोथ (dermatitis), अथवा पित्ती (urticaria) का रूप धारण कर लेता है। इन रोगों की उचित चिकित्सा के लिये यह जानना आवश्यक है कि त्वचा किस चीज से प्रभावित हुई है। वर्तमान काल में अनेक वस्तुएँ त्वचा को प्रभावित करती हैं, जिनमें नाई का उस्तरा और सौंदर्यवर्धक वस्तुएँ (cosmetics) मुख्य हैं।

त्वचा हमारे शरीर के लिये दर्पण के समान है, जिसपर हँसी, प्रसन्नता, दुःख तथा खिन्नता का प्रभाव तुरंत पड़ता है। प्यास (रूसी) का कारण मानसिक परेशानी और नींद न आना है। त्वचा पर अन्य अंगों के रोग का भी प्रभाव पड़ता है, जैसे मधुमेह और पीलिया रोगों में शरीर पर खुजली हो जाती है।

पसीना कम निकलने से भी त्वचा के रोग हो सकते हैं। इसी प्रकार चर्बी की ग्रंथि से भी रोग होते हैं। इनमें से एक रोग का नाम मुहाँसा (acne vulgaris) है, जो प्रायः युवा लड़कों तथा लड़कियों में देखा जाता है। वस्तुतः यह रोग नहीं है। इस आयु में लिंग ग्रंथियों के कार्यरत होने के कारण चर्बी की ग्रंथियाँ अपने आप चर्बी उत्पन्न करती हैं। जिसको मुहाँसे का रोग है उसे मीठा, मिर्च तथा मसाला कम खाना चाहिए। मुहाँसों को नोचना नहीं चाहिए।

त्वचा पर बाल भी होते हैं। कभी कभी सिर के बाल अधिक टूटते हैं। इसके लिये सिर की सफाई और किसी सादे तेल का प्रयोग लाभकर सिद्ध होता है। कभी कभी युवा लड़के, लकड़ियों के बाल कम आयु में ही सफेद हो जाते हैं, जिससे वे दुःखी रहते हैं। कभी कभी सिर या दाढ़ी के बाल जगह जगह से उड़ जाते हैं। इसका कारण शायद चिंता है। यदि रोगी को विश्वास दिलाते रहें कि उड़े हुए बाल पुनः आ जाएँगे, तो इससे लाभ होता है।

त्वचा के साथ साथ नाखून का भी वर्णन करना आवश्यक है। नाखून में भी त्वचा के समान दाद हो सकती है। कभी कभी नेल पालिश से नाखून शीघ्र टूट जाते हैं या खुरदरे हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त चिंता भी त्वचा का रोग पैदा कर देती है। त्वचा के सफेद होने को सफेद दाग (leucoderma) कहते हैं। नासमझी में इसको कोढ़ (कुष्ठ) समझा जाता है। इससे रोगी को और चिंता हो जाती है। इस रोग में त्वचा को रूई से छूने से भी सूई छेदने जैसी पीड़ा होने लगती है। लेकिन कुष्ठ में पीड़ा नहीं होती। अभी तक इस रोग की कोई संतोषजनक चिकित्सा ज्ञात नहीं हो सकी है।

त्वचा के कुछ रोग ऐसे होते हैं, जो पुनः पुनः प्रकट होते हैं, जैसे सोरिऐसिस (psoriasis) इसका वास्तविक कारण अज्ञात है। ल्यूपस एरिथेमटोसस (lupus erythematosus) भी ऐसा ही रोग है।

यदि ठीक समझदारी के साथ चिकित्सा हो तो त्वचा के अधिकतर रोग ठीक हो जाते हैं। त्वचा के थोड़े ही रोग ऐसे होते हैं, जिनसे मृत्यु होती है, जैसे पेंफिगस (pemphigus)। इस रोग में बदन, मुँह और गुप्तेंद्रियों पर छाले निकलते हैं। भाग्यवश इस रोग में कॉर्टिसेस्टेरॉयड (corticesteroid) से एक नवीन आशा उत्पन्न हो गई है और रोग पर बहुत कुछ नियंत्रण पा लिया गया है, किंतु रोगी को जीवन भर अल्प मात्रा में इसका प्रयोग करते रहना चाहिए।

कैंसर (Cancer) रोग शरीर के प्रत्येक अंग में हो सकता है। त्वचा में भी कैंसर हो सकता है। यदि रोग का शीघ्र निदान हो जाता है और शल्यचिकित्सा, डीप एक्सरे (Deep X-ray), रेडियम अथवा अन्य उपचार से लाभ हो जाता है, तो रोगी की आयु बढ़ जाती है।

–डॉ. आई.एल. जैन

सौजन्य : श्रीमती प्रेमलता जैन एवं डॉ. आई.एल. जैन
30, न्यू अरिहंत नगर, कालका माता रोड़, पहाड़ा, युनिवर्सिटी रोड़, उदयपुर मो. : 9414168660